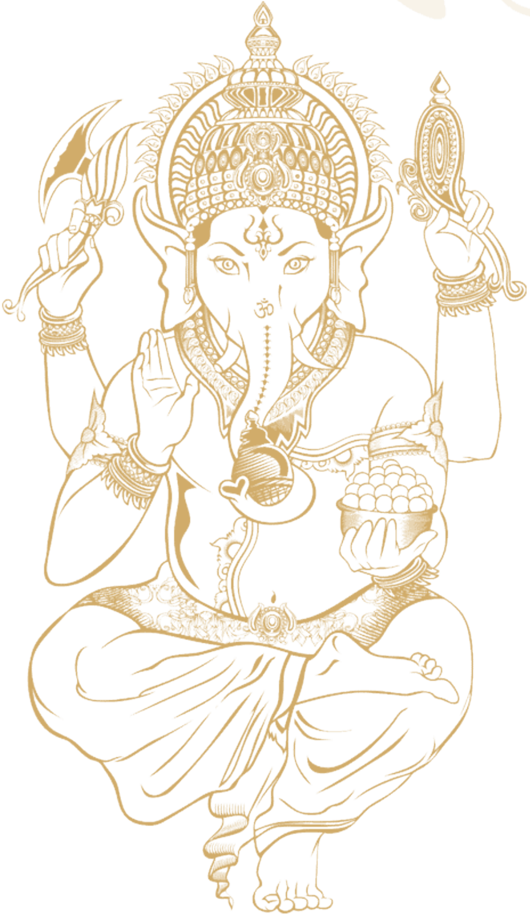

BABY 2ND HARSH MAHAWTA

19 Aug 2025

05:26 PM

Pune

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119161301

तिथि 19/08/2025 **समय** 17:26:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:59
अक्षांश 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	14:44:13 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:03:38 घं	योनि	श्वान
सूर्योदय	06:16:49 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:58:11 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मार्जार
मास	भाद्रपद	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	ङ--
नक्षत्र	आर्द्रा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
योग	वज्र	होरा	चंद्र
करण	कौलव	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
राहु 5वर्ष 11मा 26दि
राहु
19/08/2025
16/08/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/08/2025
शुक्र	04/03/2028
सूर्य	27/01/2029
चन्द्र	29/07/2030
मंगल	16/08/2031

योगिनी
मंगला 0वर्ष 3मा 30दि
मंगला
19/08/2025
19/12/2025

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/08/2025
सिद्धा	29/09/2025
संकटा	19/12/2025

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:39:50	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	केतु	---	0:00			
सूर्य			02:32:51	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.86	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			15:33:46	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	1.23	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			13:39:41	कन्या	हस्त	2	चंद्र	राहु	शत्रु राशि	1.10	पुत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध			13:58:58	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	शत्रु राशि	0.91	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			21:18:08	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.04	अमात्य	धन	सम्पत
शुक्र			28:25:26	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.19	आत्मा	कलत्र	सम्पत
शनि	व		06:36:03	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.24	ज्ञाति	आयु	विपत
राहु	व		24:15:32	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		24:15:32	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

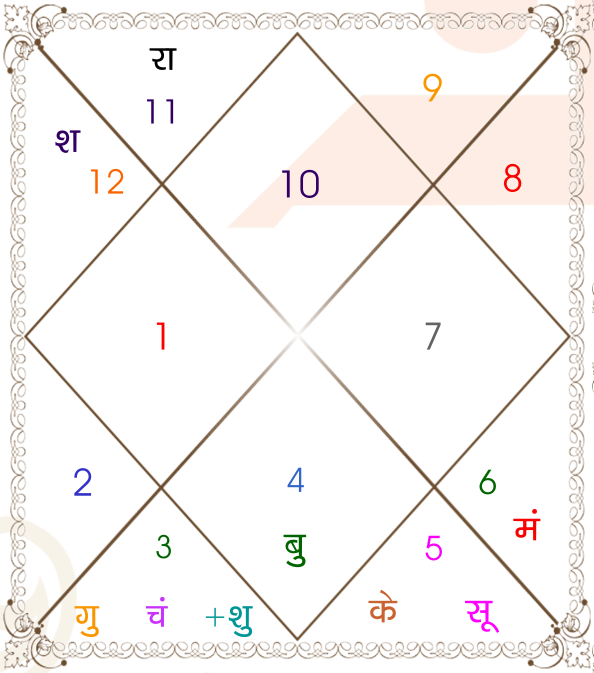

चन्द्र कुंडली

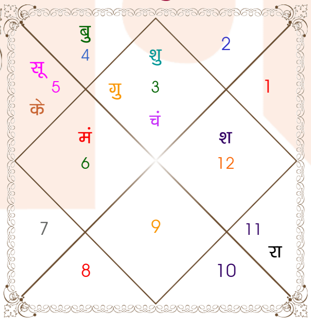

नवमांश कुंडली

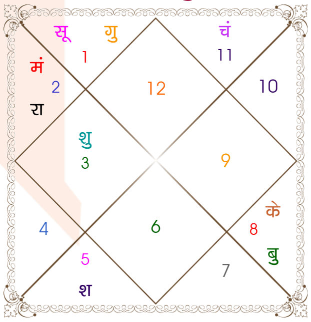

सर्वाष्टकवर्ग

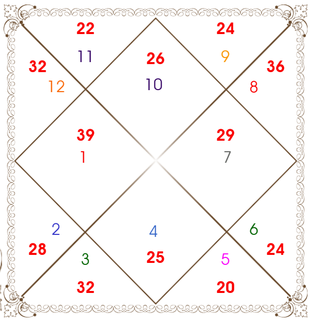

दशमांश कुंडली

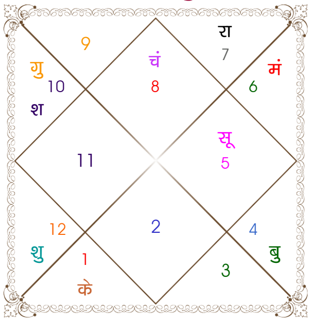

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी श्वान योनि, वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य तथा गण मनुष्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ङ" या "ग" होगा। यथा-गरिमा, गायत्री आदि।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगी। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगी साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगी। आप दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगी। समीपस्थ बन्धुओं की आप प्रिय रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगी तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगी। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगी एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगी। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ है। अतः आप के नेत्र अल्प रक्तमय श्यामवर्ण के तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर पुष्ट एवं स्वस्थ होंगे एवं नासिका भी उन्नत रहेगी। शास्त्राध्ययन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक अध्ययन से आप शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगी। सन्देशों का आदान प्रदान करना या दूतिका का कार्य आपको रूचिकर लगेगा। आप अत्यन्त ही कुशाग्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा इसी तीक्ष्णता के आधार पर अन्य जनों की मन की बात को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपका व्यवहार समाज के लोगों से विनम्र तथा विनयशील रहेगा जिससे आप सबकी प्रशंसा पात्र होंगी। आपकी वाणी अत्यन्त प्रिय एवं मधुर होगी जो श्रोता के मन को प्रसन्नता प्राप्त करेगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप आजीवन निपुण रहेंगी। संगीत आपका अति प्रिय होगा तथा नृत्य शास्त्र की आप ज्ञाता होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपकी हथेली में मत्स्याकार चिन्ह होगा तथा शरीर की नसें स्पष्ट दिखाई देंगी। आप की लम्बाई भी पूर्ण होगी। आप अत्यन्त सुन्दर तथा रूपलावण्य से युक्त होंगी। लेखन प्रतिभा से आप नैसर्गिक रूप से ही सम्पन्न रहेंगी तथा साहित्य या शास्त्रों के पठन पाठन तथा

लेखन कार्य में पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगी। आप समस्त भौतिक सुखों तथा संसाधनों से जीवन भर युक्त रहेंगी। पुरूष वर्ग को अपने वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी तथा सौभाग्य हमेशा आपका साथ देगा।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगी तथा आजीवन हंसने हंसाने के कार्य में सफल एवं निपुण रहेंगी। आपकी इधर उधर घूमने या यात्रादि में भी रूचिशील रहेंगी। घर में रहकर भी आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपके समाज में अत्यन्त विस्तृत संबंध होंगे तथा अपने समाज में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पुरूष वर्ग में आप अत्यन्त प्रिय होंगी तथा उनके प्रति आपका अधिक आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप अपनी योग्यता से यश तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

बोलने या लिखने में आपकी भाषा श्लिष्टयुक्त स्पष्ट अर्थ वाली होगी जो सुगमता पूर्वक पाठक या श्रोता ग्रहण कर सकेंगे। आप अपने बन्धु वर्गों तथा समाज के सभी वर्गों की भलाई तथा सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। आपकी प्रकृति पित तथा कफ मिश्रित होगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आप हमेशा नेत्रों की चंचलता से युक्त रहेंगी। नृत्य तथा संगीत के प्रति आप का विशेष आकर्षण होगा तथा इसके प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी। आप अपनी योग्यता तथा सद्व्यवहार से धनैश्वर्य तथा सुखों का उपभोग करेंगी। भाषण देने की कला में भी आप अत्यन्त दक्ष होंगी। साथ ही आप जिस चीज को मन में एक बार सोच लेंगी उसे पूर्ण करके ही

रहेंगी। आप न्यायवादी भी होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में पैदा हुई हैं। अतः देवता तथा ब्राह्मणों की आप नित्य पूजार्चना करने वाली होंगी तथा इनके प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा का भाव रहेगा। यदा कदा आपके अर्न्तमन में अभिमान का भाव भी जागृत होगा। दया एवं करूणा के भाव से आप युक्त रहेंगी तथा समय समय पर इस भावना का प्रदर्शन करेंगी। आप बलवती होंगी तथा एक से अधिक कलाओं या कार्यों को करने वाली होंगी। आपका शरीर कान्तिमय, सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके द्वारा बहुत से लोगों को सुख की प्राप्ति भी होगी।

आप आजीवन मान सम्मान तथा सुख संसाधनों का उपभोग करेंगी। नेत्र आपके बड़े होंगे तथा शरीर का आपका गौरवर्ण रहेगा। साथ ही आप नगरवासियों को वश में रखने वाली अथवा नगर की सम्मानित महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगी तथा आपका मन हमेशा उत्साह से भरा रहेगा परिणाम स्वरूप जो भी कार्य करेंगी उसमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक निर्भय महिला होंगी तथा निडरता पूर्वक समस्याओं का सामना एवं समाधान करेंगी। लेकिन अपने भाई बन्धुओं के साथ आपका वैमनस्य का भाव रहेगा तथा यदा कदा उनसे झगड़ा भी करेंगी। परन्तु माता पिता की आप आजीवन निस्वार्थ सेवा करने वाली होंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने

बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र,

चतुष्पाद करण, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र तथा परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय, लेन देन आदि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय पहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार अथवा नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः एवं सायं काल नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुद्धवार का व्रत भी रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, गुड, घी इत्यादि पदार्थो को किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होकर लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com